प्रातः क्लास 13/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओम शान्ति। बाप को ही बच्चों को समझाना है। ऐसे नहीं कि बच्चे बैठ बाप को समझा सकते हैं। नहीं। बाप ही बच्चों को समझाते हैं– बच्चे, मन्मनाभव। बच्चे नहीं कहेंगे, शिवबाबा मन्मनाभव। यूँ भल बच्चे आपस में बैठ चिट-चैट करते हैं, राय निकालते हैं; परन्तु मूल बात यह है महामंत्र जो बाप ही देते हैं। गुरु लोग मंत्र देते हैं ना। यह रिवाज कहाँ से निकला? यह जो बाप नई सृष्टि रचने वाला है वही पहले-2 मंत्र देते हैं मन्मनाभव। इसका नाम ही है वशीकरण मंत्र अर्थात माया पर जीत पाने का मंत्र। यह कोई अंदर में जपना नहीं है, यह तो समझाना होता है। बाप अर्थ सहित समझाते हैं। भल गीता में है; परन्तु अर्थ कोई नहीं समझते हैं। गीता का एपिसोड भी है; परन्तु सिर्फ नाम बदली कर दिया है। कितने ढेर पुस्तक आदि भक्तिमार्ग आदि में बनते रहते हैं। वास्तव में यह तो ओरली बाप बच्चों को समझाते हैं। बाप की आत्मा में ज्ञान है। बच्चों की आत्मा ही ज्ञान धारण करती है। बाकी सिर्फ सहज कर समझाने लिए यह चित्र आदि बनाई जाती है। तुम बच्चों की बुद्धि में यह सारा नॉलेज है। तुम जानते हो बरोबर आदि सनातन एक ही देवी-देवता धर्म था। इस समय तो बहुत धर्म हैं। यह जो सतोप्रधान नई दुनिया थी सो अभी तमोप्रधान हो गई है। यह भी चित्र तुम दिखला सकते हो और सभी जो धर्म हैं उन्हों के भी नक्शे तुम रख सकते हो। कितने ढेर धर्म हैं। बोलो, यही भारत था जबकि एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था और कोई खण्ड नहीं था। फिर बाद में और खण्ड एड हुई है। तो वह भी चित्र एक कोने में रख देना चाहिए, जहाँ तुम दिखलाते हो भारत में इनका राज्य था तो और कोई धर्म नहीं था। अभी तो कितने धर्म हैं। फिर यह सभी न रहेंगे। यह है बाबा का प्लैन। उन बिचारों को कितनी चिंता लगी हुई है। गवर्नमेंट तो इन बातों को समझने वाली नहीं है। तुम बच्चे समझते हो यह तो बिल्कुल ही ठीक है। लिखा हुआ भी है बाबा आकर ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं। किसकी? नई दुनिया की। जमुना का कंठा यह है कैपिटल, जहाँ एक ही धर्म होता है। झाड़ बिल्कुल छोटा है। इस झाड़ का ज्ञान भी बाप देते हैं। चक्र का भी ज्ञान देते हैं। सतयुग में एक ही भाषा होती है। और कोई भाषा नहीं होगी। तुम सिद्ध कर सकते हो एक ही भारत था। एक ही राज्य, एक ही भाषा थी। राम-राज्य भी नहीं था। पैराडाइज़ हेविन में सुख-शांति थी। दुख का नाम-निशान नहीं था। हेल्थ-वेल्थ-हैपीनेस सभी थी। भारत नया था तो फिर आयु भी बड़ी थी; क्योंकि पवित्रता थी। पवित्रता में हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। अपवित्रता में तो देखो मनुष्यों का क्या हाल हो जाता है। बैठे-2 अकाले मृत्यु हो जाती है। गर्भ के अन्दर भी मर पड़ते हैं। दुख कितना होता है। जवान भी मर पड़ते हैं। वहाँ अकाले मृत्यु होता नहीं, फुल एज चलती है। पीढ़ी तक अर्थात बुढ़ापे तक कोई मरते नहीं हैं। किसको भी समझाओ तो बुद्धि में यह बिठाना है बेहद के बाप को याद करो। वही पतित-पावन है। वही सद्गति दाता है। तो तुम्हारे पास वह नक्शा भी होना चाहिए। तो सिद्ध कर समझा सकेंगे आज का नक्शा यह है, कल का नक्शा यह है। कोई तो अच्छी रीत सुनते हैं, यह पूरा समझाना होता है। यह भारत अविनाशी खण्ड है। जब यह देवी-देवता धर्म था तो और कोई धर्म था नहीं। अभी वह आदि सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं। यह ल॰ना॰ कहाँ गए? कोई बता न सकेंगे। कोई में ताकत नहीं बताने की। तुम बच्चे अच्छी रीत रहस्य युक्त समझाते हो। इसमें मुँझने की तो दरकार ही नहीं। तुम सभी कुछ जानते हो और फिर रिपीट भी कर सकते हो। तुम कोई से भी पूछ सकते हो यह कहाँ गए? तुम्हारे प्रश्न सुन कर वायरे हो जावेंगे। तुम तो निश्चय से बतलाते हो यह कैसे 84 जन्म लेते हैं? बुद्धि में तो है ना। तुम झट से (क)हेंगे सतयुग नई दुनिया में हमारा राज्य था। एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, दूसरा कोई धर्म जाते नहीं। एवर नथिंग न्यू। हरेक चीज़ सतोप्रधान होती है। सोना भी अथाह होता है। कितना सहज सोना .....लता होगा, जो फिर ईंटें-मकान आदि बनते होंगे। वहाँ तो सभी कुछ सोने का होता है। खानियाँ सभी तुम ..... होंगे। इमीटेशन तो निकालेंगे नहीं, जबकि रियल बहुत है। यहाँ तो रियल का नाम नहीं, इमीटेशन

(बनावटी) का कितना ज़ोर है। इसलिए कहा जाता है झूठी माया झूठी काया..... सम्पत्ति भी झूठी है। हीरे-मोती ऐसे-ऐसे किस्म के निकलते हैं जो पता ही नहीं पड़ सकता कि यह सच्चा है वा झूठा है। शो इतना होता है जो परख नहीं सकते हैं यह झूठा है वा सच्चा। शुरू में तो बहुत ठगा कर आते थे। पहले नकली थी लाल माणिक। फिर हीरे। अभी तो ऐसी झूठी हीरे निकलते हैं जो बिल्कुल ही मनुष्य मुँझ जाते हैं। परख नहीं सकते। भारी भी बहुत कर देते हैं। तो फर्क का पता नहीं पड़ता। वहाँ तो यह झूठी चीज़ें आदि नहीं होती। विनाश होते हैं तो सभी धरती के नीचे चली जाती हैं। इतने बड़े-2 पत्थर, हीरे आदि मकानों में लगाते होंगे। वह सभी कहाँ से आता होगा? कौन कट करते होंगे? इण्डिया में भी होशियार बहुत हैं। असल में सबसे तीखे बेल्जम(बेल्जियम) के तरफ हैं। यहाँ भी कट होती है। एक्सपर्ट हो जाते हैं ना। यहाँ होशियार होकर वहाँ भी होशियारी लेकर जावेंगे। आकर कारीगर बनेंगे हीरा काटने लिए। ताज आदि रफ हीरे के थोड़े ही बनेंगे। वह तो बिल्कुल रिफाइ(न) सच्चे हीरे होते हैं। यह बिजली, टेलीफोन, मोटरें आदि पहले कुछ भी नहीं था। बाबा के इस लाइफ के अन्दर ही क्या-2 निकला है! 70/80 वर्ष हुए हैं जो यह सभी निकले हैं। वहाँ तो बड़े एक्सपर्ट होते हैं। अभी तक सीखते रहते, होशियार होते रहते हैं। यह भी बच्चों को सा॰ कराया हुआ है वहाँ हेलीकॉप्टर भी फुल प्रूफ होते हैं। बच्चे भी सतोप्रधान, बड़े तीव्र बुद्धि वाले होते हैं। आगे थोड़ा चलो तुमको सब सा॰ होंगे। अपने देश नजदीक आते हैं तो झाड़ दिखाई पड़ते हैं ना। अन्दर में खुशी रहती है अभी घर आया कि आया। अभी आकर पहुँचे हैं। पिछाड़ी में तुमको भी ऐसे सा॰ होते रहेंगे। जो-जो अच्छे महावीर होंगे। ठक्का सुनने से उनकी प्राण नहीं निकलेगी। बच्चे समझते हैं मोस्ट बिलवेड बाबा है। वह है ही सुप्रीम आत्मा। उनको सभी याद भी करते हैं। भक्तिमार्ग में तुम याद करते थे ना परमात्मा को; परन्तु यह मालूम था कि वह छोटा है वा बड़ा है। गाते भी हैं चमकता है अजब सितारा भृकुटि के बीच में। तो ज़रूर बिन्दी मिसल होगा ना। उनको ही कहा जाता है सुप्रीम आत्मा यानी परमात्मा। उनमें खूबियाँ तो सभी है ही। ज्ञान का सागर है, क्या ज्ञान सुनावेंगे। वह तो जब सुनावे तब तो मालूम पड़े ना। तुम भी पहले जानते थे क्या। सिर्फ भक्ति ही जानते थे। अभी तो समझते हो वण्डर है। आत्मा को भी इन आँखों से दे(ख) नहीं सकते हैं। तो बाप को भी भूल जाते हैं। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है जिसको विश्व का मालिक बनाते उनका नाम डाल देते और सुनाने वाले का नाम गुम कर देते हैं। श्री कृष्ण को तो त्रिलोकीनाथ, बैकुण्ठ नाथ कह दिया है। अर्थ कुछ नहीं समझते हैं। उनकी बड़ाई दे देते और शिवबाबा जिसने उनको ऐसा बनाया उनको भित्तर-ठिक्कर में ठोक दिया है। मनुष्यों को कुछ भी समझ नहीं हैं। समझते हैं भक्ति करने ... भगवान मिलेगा। अरे, तुम तो कहते हो हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ तो इससे सिद्ध है, भक्ति करते-करते तुम पतित बने हो ना। तब तो बाप कहते हैं मैं इन साधुओं का भी उद्धार ..... मैं आता हूँ। कितनी उन्हों की बड़ाई करते हैं। कितना पैसा खर्च करते हैं! अहंकार कितना होता है! यह ..... तमोप्रधान। सतोप्रधान तो रहते ही हैं सतयुग में। कितनी उन्हों की बड़ी सवारी निकलती है। यह है भक्तिमार्ग के रसम-रिवाज। प्राइम मिनिस्टर आदि ऐसे करते हैं क्या? सन्यासी लोग शंकराचार्य अ..... कितना भभका दिखाते हैं। इन्हों से गवर्नमेंट भी डरते हैं कि कहाँ श्राप न दे दें। इन पर कुछ कहानि भी बैठ बनाई है कि श्राप मिल गया.....। ऐसे कब होता नहीं है। यह बातें बैठ बना..... भगवान में इतनी ताकत है वह हज़ारों सूर्यों से भी तेज है। भंभोर को आग लगा दी ..... मनुष्यों को जलाने में क्या देरी करेंगे। सभी कुछ भस्म कर दिया। ऐसी-2 बातें बना दी है। ..... बच्चों को जलाऊँगा कैसे। यह तो हो नहीं सकता। बच्चों को बाप कब डिस्ट्रॉय करेंगे? ड्रामा रची हुई है। बाकी डिस्ट्राय कोई करते थोड़े ही हैं। यह ड्रामा में पार्ट है। पुरानी दुनिया खत्म

पुरानी दुनिया के विनाश के लिए यह नेचरल कैलेमिटीज़ सभी काम करने वाले हैं। कितने जबरदस्त काम करने वाले हैं। ऐसे नहीं कि इन्हों को कोई बाप डायरैक्शन देते हैं कि विनाश करो। नहीं। धरती हिलती है, अकाल पड़ती है, भगवान कहते हैं क्या कि यह करो? कभी नहीं। यह ड्रामा में पार्ट है। बाप नहीं कहते हैं बॉम्ब्स आदि बनाओ। यह सभी रावण की मत कहेंगे। यह बना बनाया ड्रामा है। रावण का राज्य है तो आसुरी बुद्धि बन जाते हैं। कितने मरते हैं, आखरीन में सभी जला देंगे। बाप थोड़े ही कहते हैं। यह बना बनाया खेल है जो रिपीट होता रहता है। बाकी ऐसे नहीं शंकर की आँख खुलने से विनाश हो जाता है। इनको गॉडली कैलेमिटीज़ भी कहेंगे। यह नेचरली है। अभी बाप तुम बच्चों को श्रीमत दे रहे हैं। कोई को दुख आदि देने की बात नहीं। बाप तो है ही सुख का रास्ता बताने वाला। ड्रामा प्लैन अनुसार मकान तो पुराना होता ही है। जब देखेंगे इन(का) तो डर है गिरने का तो फिर नया बनावेंगे। बाप भी कहते हैं यह सारी दुनिया पुरानी हो गई है। यह खलास होनी है। आपस में लड़ते देखो कैसे हैं। आसुरी बुद्धि है ना। जब ईश्वरीय बुद्धि है तो कोई भी मारने आदि की बात ही नहीं। बाप कहते हैं मैं तो सभी का बाप हूँ। हमारा सभी पर प्यार है। बाबा यहाँ देखते हैं फिर अनन्य बच्चों तरफ भी नज़र जाती है, जो बाप को बहुत प्रेम से याद करते हैं, सर्विस भी करते हैं। यहाँ बैठे भी बाप की नज़र सर्विसएबुल बच्चों तरफ चली जाती है—कब देहरादून, कब मेरठ, कब दिल्ली। जो बच्चे मुझे याद करते हैं मैं भी उन्हों को याद करता हूँ। जो मुझे न भी याद करते हैं तो भी मैं उनको याद करता हूँ; क्योंकि मुझे तो सभी को ले जाना है ना। हाँ, मेरे द्वारा सृष्टिचक्र की नॉलेज को समझते हैं। नम्बरवार फिर वह ऊँच पद पावेंगे। यह बेहद की बातें हैं। वह टीचर आदि होते हैं। यह है बेहद का। तो बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी होनी चाहिए। बाप कहते हैं सभी का पार्ट एक जैसा हो नहीं सकता। इनका तो पार्ट था; परन्तु फॉलो करने वाले कोटों में कोऊ निकले। बाबा समझाते हैं ऐसे छोड़ना होता है। तो विश्व किशोर भी ऐसे ही छोड़कर आया। तुम तो भागे। यह तो क्लीयर कर निकले। भागने आदि की बात ही नहीं। तुम्हारी भट्ठी बननी थी। फिर उसमें कितने कच्चे निकले, कोई पक्के निकले। भट्ठी में पुंगरे आ गए हैं। कहते हैं ना बाबा हम सात दिन का बच्चा हूँ। एक/दो दिन का बच्चा हूँ। तो पुंगरे ठहरे ना। तो बाप हर बात समझाते रहते हैं। नदी भी बरोबर पास कर आए थे। बाबा के आने से ही ज्ञान शुरू हुआ है। उनकी कितनी महिमा है। वह गीता के अध्याय तो तुम जन्म-जन्मांतर कितनी बार पढ़ी होगी। फर्क देखो कितना है—कहाँ कृष्ण भगवानुवाच, कहाँ शिव भगवानुवाच। रात-दिन का फर्क है। झूठी गीता शास्त्र आदि पढ़ते झूठ खण्ड बन गया है। तुम्हारी बुद्धि में अभी है हम सच खण्ड में थे, सुख भी बहुत देखा। ¾ सुख देखते हैं। बाबा ने ड्रामा सुख के लिए बनाया है, न कि दुख के लिए। यह तो बाद में मुसलमान जब आते हैं तब से तुमको दुख मिला है। लड़ाई तो इतना जल्दी लग नहीं सकती। तुमको बहुत सुख मिलता है। आधा-आधा हो तो इतना मज़ा न हो। वह तो जब धर्म स्थापन हो उनकी बहुत वृद्धि हो, नई-2 आत्माएँ आवें, बहुत लश्कर बने तब काम हो। अभी तो लड़ाइयाँ कितनी लगती रहती हैं। फिर 3½ सौ वर्ष तो कोई लड़ाई नहीं। बीमारी आदि नहीं। यहाँ तो देखो बीमारी पिछाड़ी बीमारी लगी हुई है। सतयुग में थोड़े ही ऐसे कीड़े आदि होंगे, जो अनाज खा लेवें। इसलिए उनको तो नाम ही है स्वर्ग, हेविन। तो तुमको वर्ल्ड का (न)क्शा भी रखना चाहिए, तो समझा सकेंगे असल में भारत यह था। और कोई धर्म नहीं था। फिर नम्बरवन ..... स्थापन करने वाले आए हैं। अभी तो तुम बच्चों को वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का मालूम है। तुम्हारे ..... तो बाकी सभी कह देंगे नेती-2, हम बाप को नहीं जानते हैं। कह देते हैं उनका कोई नाम-रूप, (देश)-(का)ल है नहीं। नाम-रूप नहीं तो फिर कोई देश भी नहीं हो सकता। मनुष्यों की बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि .....ती है। शंकराचार्य भी शिव की पूजा करते हैं। सर्वव्यापी अगर है तो फिर क्यों नहीं फिर ठिक्करों-भित्तरों

की बैठ पूजा करे। अपनी पूजा कराते हैं। इन सभी बातों को अज्ञानता कहा जाता है। कुछ भी समझते नहीं, इतने पत्थर बुद्धि बन पड़े हैं। कहते भी हैं तुम तो ठिक्कर बुद्धि हो। वहाँ ऐसी गालियाँ आदि होती नहीं। तो बाप बैठ समझाते हैं मुझे जो याद करते हैं, प्यार करते हैं, मैं भी उनको कितना प्यार करता हूँ। मैं नई दुनिया कैसे बनाता हूँ। फिर वह पुरानी दुनिया खत्म हो जाती है। पुरानी दिल्ली और नई दिल्ली गाया जाता है ना। तुम जानते हो यह कोई नई दिल्ली थोड़े ही है। इनको तो कब्रिस्तान कहा जाता। नई दुनिया है परिस्तान। मेरे बच्चे काम चिक्षा पर बैठ भस्म हो गए हैं, मुर्दे बन गए हैं। फिर बाप आकर ज्ञान चिक्षा पर बिठाते हैं। काम चिक्षा पर बैठने से रावण राज्य हो जाता है। फिर ज्ञान चिक्षा पर बैठने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हैं। कितना सहज समझाते हैं। भल गृहस्थ व्यवहार में रहो; परन्तु बाप को याद करो। जिनको बंधन आदि नहीं हैं वह झट ज्ञान उठा सकते हैं। इनमें तो बाप ने प्रवेश किया है। ऐसे नहीं बाप ने छुड़ाया। जैसे कि वैराग्य आने लगा यह सृष्टि तो खत्म होनी है। विनाश देख लिया तो वैराग्य क्यों नहीं आवेगा। सन्यासियों को तो विनाश का सा॰ होता नहीं है। यह तो समझते थे विनाश होने वाली चीज़ से दिल क्या लगावेंगे। इनको कहा जाता है बेहद का वैराग्य। खत्म होने वाली चीज़ में प्रेम क्या रखना है। आत्माओं को बाप बैठ समझाते हैं यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अभी स्वर्ग को याद करो, बाप को और वर्से को याद करो। बाप को याद करेंगे तो वर्सा है ही। मन्मनाभव का अर्थ भी है–मुझे याद करो तो तुम चतुर्भुज बनेंगे अर्थात महाराजा-महारानी बनेंगे। कितना सहज समझाते हैं। विनाश तो होना ही है। इसलिए यह सभी छोड़ना है। फिर नई दुनिया में तुम वह बनेंगे। तो विनाश के पहले ही छोड़ देना पड़े ना। बाबा को खुशी का पारा चढ़ गया और वैराग्य आ गया सारी दुनिया से तुमको भी वैराग्य होता है। ज्ञान-भक्ति फिर है वैराग्य। यह सभी विनाश होने वाले हैं। अभी तो हमको वापस घर जाना है। इसके लिए पुरुषार्थ करना है। यह पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगी, फिर हम नई दुनिया में वाया शान्तिधाम जावेंगे। स्वीट बाप, स्वीट होम, स्वीट राजधानी को ही याद करते रहना है। बाप तुम बच्चों को भी कहते हैं अभी नई दुनिया में चलना है तो बाप को और नई दुनिया को याद करो। फिर भी बुद्धि और और तरफ चली जाती है। बाप क(हते) हैं दिन को तो भल धंधा आदि करो। राम सिमर मोरे मन प्रभात रे। प्रभात(सुबह) को शिवबाबा को याद करो। हे आत्मा, हे मुझ आत्मा के मन, प्रभात को बाप को याद करो। यह अभी की ही बात है। भक्ति में इनका अर्थ थोड़े ही समझते हैं। मुख से कुछ आवाज़ भी नहीं करना है। बाप को याद करना है। बेहद ..... बाबा है यह तो परिचय मिल गया है। बाप कहते हैं मुझे याद करेंगे तो तुम स्वर्ग में चलेंगे। औरों को ..... परिचय देंगे, तो ऊँच पद पावेंगे। सवेरे में बड़ा मज़ा आता है। चाहे उठकर बैठो, चाहे घूमो-फिरो, बाप ..... याद करो। यह तो जानते हो विनाश ज़रूर होना है। फिर हम जावेंगे अपने घर। कपड़े तो तुम यह .... हो ना। कल्प-2 तुमको वही कपड़े, वही फिचर्स मिलते रहते हैं। यह बेहद का झाड़ है जिसको अच्छी ..... समझना है। प्ले आदि तो अथाह हैं, उनको कितना याद करेंगे। बाप को याद किया तो गोया झाड़ ..... किया। इसलिए बाप कहते हैं मन्मनाभव। बाप को और नई दुनिया को याद करो। ऐसी कोई ब.... नहीं जो कुछ समझ न सके। अक्षर ही दो हैं। स्वर्ग में जाना है तो दैवीगुण भी धारण करनी है। से..... बच्चे बिगर कहे कि आपे ही धारण करेंगे। बनना ही ऐसा(ल॰ना॰) है तो दैवीगुण ज़रूर धारण करनी ..... ना। कितना अच्छी रीत रोज़-2 सभी सेन्टर्स के बच्चों को समझाते हैं।

अच्छा, मीठे-2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार, गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

शिवबाबा याद है?